NITI Aayog

Ministry of Agriculture & Farmers Welfare
Government of India

Food and Agriculture Organization of the United Nations

राष्ट्रीय संवाद

2030 की ओर अग्रसर भारतीय कृषि

किसानों की आय बढ़ाने, पोषण सुरक्षा एवं सतत खाद्य प्रणाली के लिए दिशा एवं उपाय

शोध-पत्र: भारत में जल एवं कृषि का रूपांतरण

डॉ. मिहिर शाह और प्रो. पी.एस. विजय शंकर

यह शोध-पत्र तर्क के साथ दो सुझाव देता है: (क) भारतीय कृषि की समस्याओं को जल प्रबंधन एवं गवर्नन्स में बदलाव के बिना दूर नहीं किया जा सकता है, और (ख) भारत के जल संकट को दूर करने हेतु कृषि में बदलाव लाने की आवश्यकता है। अगर सिंचाई के पानी का 80 प्रतिशत हिस्सा केवल तीन ऐसी फसलों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिनके लिए पानी की अधिक आवश्यकता होती है, तो पेयजल या सुरक्षात्मक सिंचाई जैसी देश की बुनियादी जरूरतें कभी भी पूरी नहीं हो सकती। यह शोध-पत्र रुपरेखा सूझता है कि ऐसी फसलों की खेती करके जो प्रत्येक कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र के अनुकूल हो, इसके लिए खेती के पैटर्न में बदलाव करके, फसल जैव-विविधता को मोनोक्ल्चर से पाली-कल्चर में बदलकर और पानी की बचत करने वाले बीज एवं तकनीकों को अपनाकर, प्राकृतिक खेती की ओर कदम बढ़ाकर और मिट्टी की संरचना एवं ग्रीन वॉटर पर अधिक बल देकर 2020 से 2030 के बीच यह बदलाव कैसे लाया जा सकता है। साथ ही साथ, यह शोध-पत्र जल गवर्नन्स में ट्रांस-डिसिप्लिनरी परिप्रेक्ष का निर्माण करते हुए और हाइड्रो-सिज़ोफ्रेनिया पर काबू पाकर जल प्रबंधन हेतु सहभागी दृष्टिकोण अपनाते हुए भारत के प्रमुख जल-ग्रहण (कैचमेंट) क्षेत्रों के संरक्षण की भी वकालत करता है।

पेपर डाउनलोड करने के लिए यहां क्लिक करें।

मुख्य शब्द: फसल विविधीकरण, कृषि-पारिस्थितिकी (एग्रोइकोलॉजी), सहभागी जल प्रबंधन, ट्रांस-डिसिप्लिनरी परिप्रेक्ष, हाइड्रो-सिज़ोफ्रेनिया पर काबू पाना